



291027 - उस व्यक्ति पर क्या अनिवार्य है जिसने एक निश्चित समय पर कुछ करने की कसम खाई, परंतु उसने ऐसा नहीं किया?

प्रश्न

पिछले रमज़ान में, जबकि मैं रोज़ा रखे हुई थी, मैंने कसम खाई थी कि मैं उम्रा करूंगी। लेकिन मैं उम्रा करने में सक्षम नहीं हो सकी। क्या मुझे तीन दिन रोज़ा रखना होगा या नहीं?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

यदि आपने रमज़ान के महीने में उम्रा करने की कसम खाई, फिर वह महीना समाप्त हो गया और आपने उम्रा नहीं किया, तो आपने अपनी कसम तोड़ दी है और आपको कफ़ारा देना होगा।

इब्ने कुदामा रहिमहुल्लाह ने फरमाया : “अगर कसम कुछ करने पर खाई गई थी और उसने उसे नहीं किया, और उसकी उस कसम का शब्द, या उसका इरादा या उसकी परिस्थिति की प्रासंगिकता यह दर्शाती है कि उसकी कसम एक विशिष्ट समय से जुड़ी हुई थी, फिर वह समय (बिना कुछ किए) बीत गया, तो उसकी कसम टूट गई और उसे कफ़ारा देना होगा।” “अल-मुगनी” (9/494) से उद्धरण समाप्त हुआ।

आपको कफ़ारा (प्रायश्चित्त) के अलावा कोई अन्य चीज़ करने की ज़रूरत नहीं है।

कसम (शपथ) तोड़ने का कफ़ारा : एक दास को मुक्त करना, या दस गरीबों को खाना खिलाना, या उन्हें कपड़े देना है। जो व्यक्ति इन कामों को करने में असमर्थ है, वह तीन दिन रोज़े रखेगा ; क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّعْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْأَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ
لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

المائدة : 89

“अल्लाह तआला तुम्हारी कसमों में व्यर्थ कसम पर तुम्हारी पकड़ नहीं करता है, लेकिन तुम्हारी पकड़ उन कसमों पर करता



है जिनको तुम मजबूत कर दो। तो उसका कफ़ारा दस गरीबों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, या उन्हें कपड़े देना, या एक गर्दन (गुलाम या लौंडी) आज़ाद करना है, और जो इसमें सक्षम न हो तो तीन दिन के रोज़े (रखने) हैं, ये तुम्हारी क़समों का कफ़ारा है जबकि तुम क़सम खा लो, और तुम अपनी क़समों का ध्यान रखो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहक़ाम बयान करता है ताकि तुम आभारी (कृतज्ञ) बनो।” (सूरतुल माइदा : 89).

तथा प्रश्न संख्या (45676) का उत्तर भी देखें।

और अल्लाह ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।